ISSN:2583-8849



प्रभात गोस्वामी
बीकानेर (राजस्थान)

रेखा का लेखा

रेडियो पर विविध भारती के छाया गीत कार्यक्रम में हमारे समय की फिल्म 'अधिकार' का गीत - रेखा ओ रेखा , जब से तुम्हें देखा / खाना -पीना , सोना दुश्वार हो गया / मैं आदमी था काम का बेकार हो गया / गूँज रहा था . सच कहें तो रेखा ने गणित विषय से लेकर जिंदगी की किताब तक में कितनी उथल-पुथल मचाई हुई है . फिर भी इसका लेखा किसी के समझ में आज तक नहीं आ पाया है . कॉपी में खिंची एक रेखा से लेकर बौलीवुड तक 'रेखा' का लेखा कोई भी समझ नहीं पाया . यहाँ गणित के गुरूजी से लेकर राज करने वाले, राज रखने और खोलने वाले से भी बात कर ली , रेखा का लेखा किसी के समझ में नहीं आया . तभी तो खाना - पीना, सोना सब दुश्वार होना ही है .

रेखा की हर अदा के अलग-अलग मायने होते हैं . सीधी , टेढ़ी, आड़ी, घुमावदार, हर रेखा जीवन के अर्थ को बदल देती है . कहीं ये रेखा खुशहाली लाती है तो कहीं बर्बादी . कहीं ये रेखा जीवन को गरीबी के नीचे धकेल देती है . कहीं गरीबी की रेखा से ऊपर ले आती है . इसलिए रेखा का लेखा बड़ा विकट होता है . हाथों की हथेली पर रेखा को भी आजतक कोई नहीं समझ पाया है . ये रेखा जीवनभर कुछ होने न होने की जद्दोज़हद में आदमी को उलझाए हुए रखती है . इसी रेखा से ज्योतिष विद्या चल रही है . इसी से हस्त रेखा विशेषज्ञों की पौ बारह पच्चीस बनी हुई है .

रेखा चाहे कश्मीर से पीओके के बीच हो या अक्षयचिन और भारत के बीच हो . इसने हमेशा ही हुक्मरानों का खाना-पीना दुश्वार किया है . पहले हमारा था और आजकल इस रेखा ने पडोस वाले क्रिकेटर शासक और चीन का जीना दुश्वार कर रखा है . जब से प्रधानजी ने वक्र दृष्टि इन रेखाओं पर गड़ाई है, दोनों देशों में हलचल मची हुई है . उधर , हम जब ग़रीबी की रेखा पर चिंतन करते हैं तो हमारी चिंता पहाड़- सी नज़र आने लगती है . ग़रीबी की रेखा के नीचे और इसके ऊपर जीवनयापन करने वालों का संघर्ष अलग - अलग है . नीचे वाले ऊपर आने की ज़द्दोज़हद में लगे हुए हैं . ऊपर जीवन यापन करने वालों को ये फूटी आँख नहीं सुहाता . यहाँ तो ऊपर वाले गरीबों के लिए बनी योजनाओं का लाभ लेने के लिए गरीबी रेखा के नीचे जाने की घुसपैठ में लगे रहते हैं .

आजकल शिक्षा के अधिकार के तहत बड़े अंग्रेजी स्कूलों को मन मसोस कर गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले निर्धन बच्चों को प्रवेश देना पड़ रहा है . यहां गरीबी रेखा के ऊपर जी रहे इलीट सोच वाले इसका विरोध भी करते हैं . उनकी पीड़ा यह है की रेखा के नीचे वाले बच्चे स्कूल से अच्छी शिक्षा पा कर आगे बढ़ते हुए एक दिन गरीबी की रेखा से ऊपर आ जाते हैं. जबकि, ऊपर वाले बच्चों के परिवार स्कूल की मोटी-मोटी फीस भरते-भरते ग़रीबी रेखा के नीचे आ जाते हैं . ऐसे में जीवन भर गुलछर्रे उड़ाने के उनके सपने चूर-चूर हो कर बिखर जाते हैं . मुई इस रेखा का गणित इतना कैसे गड़बड़ा जाता है ? बेचारे धनीरामों की चिंता यही एक रेखा ही है जो उनकी आर्थिक हालत के साथ शारीरिक स्थिति भी कमज़ोर कर रही है .

ISSN:2583-8849

इस रेखा ने कई-कई संयुक्त परिवारों के बीच खिंच कर रिश्तों की रेशम -सी डोर को भी तोड़ दिया है . कहीं ये रेखा परीक्षा की कॉपी में खड़ी हो कर छात्रों के भविष्य को बैठा देती है . कहीं ये रेखा प्रेमी-प्रेमिका के बीच खिंच कर रिश्ते के बीच की लकीर बन जाती है . अब आप ही बताइए, इस रेखा को देख कर जीवन दुश्वार कैसे नहीं होगा ? रेखा जब किसी के बीच में आती है तो गज़ब ही ढाती है . हमारे बालीवुड में भी 'रेखा', का लेखा किसी के समझ नहीं आया . जो भी रेखा के पास गया उसका खाना , पीना , सोना दुश्वार ही हुआ . यहाँ नायक से महानायक तक सब का जीवन 'रेखा' को देखने के बाद ही बेकार हो गया था .

फिल्म उमराव जान में जब रेखा ने जब परदे पर - दिल चीज़ क्या है, आप मेरी जान लीजिए / बस एक बार मेरा कहा मान लीजिए / गाना गाया तो फ़िल्मी दुनिया में धमाल मच गया . अब कोई भी - रेखा जैसी मासूम अदाकारा की 'जान' ही तो नहीं ले पाया ? पर हाँ, उसका कहा मानने वालों का जो हश्र हुआ सो हुआ . बहरहाल, अपनी रमणीयता और धांसूं अदाकारी का जलवा बिखेरने वाली रेखा से बड़ी रेखा भी तो कोई नहीं खींच पाया . क्योंकि फिल्मजगत में भी कोई रेखा का लेखा समझ नहीं पाया .

हमने भी रेडियो का स्विच ऑफ किया . बैठे - ठाले अब रेखा का लेखा समझने का सामर्थ्य भी तो नहीं बचा है . भैया हमारा जीवन तो गणित के सवाल- सा उलझा ही ठीक है